श्रीमत्कुँजविहारिणेनमः

श्रीस्वामी हरिदास जी महाराज

अखिल रसिक–चक्र चूड़ामणि परम रसावतार श्री गोस्वामी हरिदास जी महाराज इस भूतल पर नित्य विहार को प्रकट करने के लिए प्रिया–प्रियतम के निज महल से अवतरित हुए थे। उस समय विधर्मियों का साम्राज्य था। धर्म, कर्मकाण्ड के भँवर में फंसा हुआ था, तब वह अति सूक्ष्म धर्म अर्थात् नित्यविहार स्वामीजी महाराज ने प्रकट किया। उन्होनें जिस रस–रीति का प्रवर्तन किया वह अनोखी थी। जिस पथ को प्राप्त करने के लिए बड़े–बड़े मुनिजन नेत्र बंद कर नासिका पकड़ कर ध्यान साधते हैं, वेद जिस पथ को प्राप्त नहीं कर सकता, उसी अनन्य रसिकों के बाँके पथ को स्वामी श्रीहरिदास जी महाराज ने विश्व में प्रकाशित किया और निःशंक होकर नवीन रस–रीति का प्रवर्तन किया, जैसा कि स्वयं वल्लभ–पथगामी श्रीगोविन्द स्वामी जी ने उनकी प्रशंसा में लिखा है–

रसिक अनन्य कौ पथ बाँकौ।
जा पथ कौ पथ लेत महामुनि, मूँदत नैन गहै नित नाकौ।
जा पथ जौ पछतात हैं वेद, लहै नहिं भेद रहै जकि जाकौ।।
सौ पथ श्री हरिदास लह्यौ, रसरीत की प्रीत चलाय निसाँकौ।
निसाननि बाजत–गाजत गोविन्द, रसिक अनन्य कौ पथ बाँको।।

श्रीस्वामी हरिदासजी महाराज का जन्म इस धराधाम पर सम्वत् **1535** (सन् **1478**) में भाद्रपद शुक्ल पक्ष अष्टमी को उस समय हुआ था जब ब्रज में वृषभान नन्दिनी श्री किशोरीजू का जन्मोत्सव मनाया जा रहा था। उनके पिता प्रसिद्ध रसिक शिरोमणि श्री आशुधीर जी महाराज थे और माता का नाम श्रीमती गंगा देवी था। वे सारस्वत ब्राह्मण थे। यह परिवार मूलतः पंजाब के मुल्तान प्रदेश का निवासी था लेकिन ब्रज–प्रेम के वशीभूत होकर श्री आशुधीर जी महाराज कोल (ब्रज की कोर) आकर बस गये थे। वहीं श्रीस्वामी हरिदासजी महाराज का जन्म हुआ और इन्हीं के नाम पर उस परम पवित्र स्थान का नाम 'हरिदासपुर' प्रसिद्ध हुआ। यह स्थान अलीगढ़ से **3** मील दूर खैर मार्ग पर स्थित है। वहाँ खेरेश्वर महादेव मन्दिर है और प्रतिवर्ष वहां भारी मेला लगता है। इसी गाँव में श्रीस्वामी हरिदासजी महाराज के भाइयों – श्रीस्वामी जगन्नाथजी एवं गोविन्द जी का जन्म हुआ।

श्रीस्वामी हरिदासजी अपने दिव्य गुणों का प्रकाश करते हुए घर में **25** वर्ष तक रहे। उनका विवाह एक परम सुन्दरी ब्राह्मणी कन्या से हुआ परन्तु श्रीस्वामीजी जिस दिव्य रस में मग्न थे, उसके समक्ष अन्य सब बंधन व्यर्थ थे। उनकी पत्नी जब श्रीस्वामी जी के दर्शन को आयीं तभी दीपक की लौ से उनका शरीर छू गया और वे प्रकाश रूपी होकर श्रीस्वामी जी के चरणों में विलीन हो गयीं, यह एक विलक्षण घटना थी।

अपने समस्त धन-धाम का परित्याग कर श्रीस्वामी हरिदासजी अपने पूज्य पिता श्री आशुधीर जी महाराज से दीक्षा लेकर श्रीधाम वृन्दावन में परम रमणीय निधिवन नामक नित्यविहार की भूमि में आकर निवास करने लगे। उस समय अर्थात् संवत् **1560** (सन् **1503**) श्रीवृन्दावन एक गहन वन था। श्रीस्वामी हरिदास जी ने वृन्दावन में निवास किया और वहाँ परम विलक्षण रस-रीति का प्रवर्तन किया। श्री स्वामी हरिदास जी महाराज नित्य-निकुँज लीलाओं में ललिता स्वरूप हैं वे नित्यविहार के नित्य समुद्र में रस मग्न रहकर प्रिया-प्रियतम का साक्षात्कार करते हुए उन्हीं की केलियों का गान करते थे।

श्रीस्वामी हरिदास जी संगीत के महान आचार्य थे। जिस समय ग्वालियर का राजा मानसिंह तौमर संगीत के विद्वानों को एकत्र कर ब्रजभाषा में ध्रुपदों की रचनाओं का संग्रह कर रहा था। उसी समय श्रीस्वामी हरिदासजी इस पावन निधिवनराज में नित्यविहार के रस से सराबोर ध्रुपदों की रचना कर रहे थे एवं दिव्य संगीत का गान कर रहे थे। इनके तानसेन, बैजूबावरा आदि शिष्यों ने संगीत का प्रचार-प्रसार किया। तानसेन को भी इनके दिव्य संगीत का एक कण मात्र प्राप्त हुआ था। तानसेन अपने आश्रयदाता सम्राट अकबर के साथ वृन्दावन में श्रीस्वामी हरिदासजी के दर्शन के लिए आया था। अकबर के आगमन पर अनेक कलाकारों ने विभिन्न चित्रों की रचना की, ये चित्र आज भी विभिन्न संग्रहालयों में हैं। इनमें श्रीस्वामी हरिदासजी तानपुरे पर संगीत गान करते हुए सामने तानसेन को बैठा हुआ, उसके पीछे सम्राट अकबर को खड़ा हुआ चित्रित किया गया है। ये चित्र इतिहास की अपूर्व निधि हैं। श्री स्वामी हरिदासजी महाराज अष्टादश सिद्धान्त के पद, श्रीकेलिमाल आदि ग्रन्थों के रचयिता हैं।

– आचार्य आनन्दबिहारी गोस्वामी
श्रीस्वामी हरिदास संस्कृति सेवा संस्थान, वृन्दावन

Tel : +91-565-2444858
Mob. : +91-9897233358 (Anand Bihari Goswami)
9897919717 (Nikhil Goswami)